यूको नर्मदा

वर्ष-4 , अंक - 1

अप्रैल सितंबर 2025

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री नीरज दापोरकर

(उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख)

मार्गदर्शक

श्री रामप्रकाश मिश्र

(सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख)

विशेष सहयोग

श्री बिनोय जोस

(मुख्य प्रबंधक)

श्री सुनील देशमुख

(मुख्य प्रबंधक)

श्री राजऋषि चौकसे

(मुख्य प्रबंधक)

संपादक

श्री शिवम उपाध्याय

(राजभाषा अधिकारी)

संपादकीय पता

यूको बैंक, अंचल कार्यालय,

206, रिद्धी शोपर्स, हज़ीरा रोड, सूरत।

अनुक्रमणिका

⇒ अंचल प्रमुख जी का संदेश.

⇒ उप अंचल प्रमुख जी का संदेश.

⇒ संपादकीय.

⇒ कविता – दास्तान- ए- जिंदगी.

⇒ लेख - बैंकिंग क्षेत्र में साइबर सुरक्षा.

⇒ लेख – विकसित भारत बैंकों की भूमिका.

⇒ लेख – नारीत्व का पर्व – रज पर्व.

⇒ कहानी– सपने 75 पार के, जो बेचेन किये रहते.

⇒ अंचल कार्यालय की विभिन्न गतिविधियां.

प्रिय यूकोजन

मुझे इस पत्रिका के माध्यम से पहली बार आप सभी यूकोजनों को संबोधित करते हुए प्रसन्नता हो रही है। प्रधान कार्यालय के उच्च प्रबंधन द्वारा मुझे सूरत अंचल का कार्यभार सौपा हैं और इस दिये गए बैंक लक्ष्यों को पूर्ण करने के लिए हम सभी एक टीम,एक स्वप्न,एक लक्ष्य की भावना को आत्मसात करते हुए अपने कॉर्पोरेट लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

शाखाओं से अनुरोध है कि अपने ग्राहकों से नियमित रुप से जुड़ाव बनाए रखें और उन्हें डिजिटल उत्पादों से जोड़कर उनकी शाखा पर होने वाली निर्भरता को करने का प्रयास किया जाए और इस कार्य के लिए आप स्टाफ सदस्यों का सहयोग अपेक्षित है। ऐसा करने से हम शारीरिक श्रम को कम कर सकते है। डिजिटल ऑनबोर्डिंग आज के समय की मांग है जिसमें क्यूआर कोड, साउंड बॉक्स, व्हाट्सएप बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, एटीएम कार्ड आदि के लिए प्रधान कार्यालय के मार्गदर्शन में नियमित लॉगिन डे मनाया जा रहा है। ऋण वितरण में उसकी गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए जिससे फ्रेश स्लिपेज को कम किया जा सके , टर्म लोन और सीसी में मेंडेट जरूर लिया जाए जिससे एसएमए खातों को सुरक्षित किया जा सके। साथ ही कम लागत वाली जमाओं के संग्रहण, डिजिटल माध्यम को प्रोत्साहन देना।
शाखाओं को अपने परिसर को साफ- सुथरा और सुव्यस्थित रखना भी जरूरी है और शाखा में अनावश्यक जो प्रयोग योग्य वस्तु नहीं है उसे संग्रह करके न रखें। शाखा के स्टाफ बैंकिंग जानकारी को अपडेट रखें और ग्राहकों के साथ सांझा करें। शाखा अपने टॉप 100 जमा ग्राहकों का लिस्ट निकालकर उन्हें नियमित रूप से कॉल करें और उन्हें बैंकिंग के जमा ब्याज दरों के बारे में बतायें साथ ही उनकी समस्या भी पूछे। साथ ही ऐसे ग्राहकों का ब्रॉडकास्ट ग्रुप बनाकर उन्हें समय –समय पर बैंकिंग से संबधित जानकारी शेयर किया जाए। शाखा हर माह 15 तारीख से पहले –पहले ग्राहक के साथ मिलन समारोह का आयोजन शाखा में किया जाए और उसका कार्यवृत बनाया जाए। ऐसे बचत खाते जहां शून्य बैलेन्स में खोले गए है उनमे फडिंग कराना सुनिश्चित करें। हर सप्ताह कम से कम 01 लोन खाता खोला किया जाए और उसका संवितरण (Disbursement) भी हो। कोई भी पोर्टल पेंडिंसी होने पर गंभीरता से लिया जाएगा। सभी ऋण खातों में नाच (Nach) अनिवार्य रूप से लिया जाए।

नीरज दापोरकर
अंचल प्रबंधक एवं उपमहाप्रबंधक

प्रिय यूको परिवार,

सूरत अंचल के सभी सदस्यों को पत्रिका 'यूको नर्मदा' के नवीन् अंक के प्रकाशन की शुभकामनाएं! यह पत्रिका हमारे अंचल की उपलब्धियों, प्रयासों और समर्पण की गवाही देती है तथा हमारे विचारों एवं अनुभवों को साझा करने का एक सशक्त माध्यम है।

वर्ष 2024-25 में आपके निरंतर सहयोग, परिश्रम और उत्कृष्ट सेवाओं के कारण हमारे अंचल ने अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कीं। नए जमाने की बैंकिंग सेवाओं, व्यवसायिक विस्तार, अंचल की संपत्तियों में वृद्धि, एवं कुशल प्रबंधन के क्षेत्र में सभी शाखाओं ने उत्कृष्ट योगदान दिया है। हमारी टीम ने सभी चुनौतियों का उत्साहपूर्वक सामना करके वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है।

आशा है, आने वाला वर्ष 2025-26 भी इसी ऊर्जा और समर्पण के साथ हमारे अंचल, बैंक और ग्राहकों के लिए उन्नति और विकास का वर्ष बनेगा। सभी सहयोगियों, शाखा प्रमुखों, कार्यपालकों एवं कर्मियों से अनुरोध है कि वे अपने दैनिक कार्यों में उत्कृष्टता बनाए रखें, नवीन विचारों को अपनाएँ और बैंक के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रेरित एवं प्रतिबद्ध रहें।पत्रिका के माध्यम से हमारे अनुभव, नवाचार, सफलताओं और सीख को साझा करें, ताकि प्रत्येक सदस्य को प्रेरणा मिल सके और हमारी टीम और अधिक संगठित होकर नए कीर्तिमान हासिल करे।

सभी सहयोगियों के उत्तम स्वास्थ्य, खुशहाली और उज्जवल भविष्य की कामना के साथ,हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. रामप्रकाश मिश्र
सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख
यूको बैंक सूरत अंचल

प्रिय साथियों

सूरत अंचल की गृह ई-पत्रिका का 1 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। आप सभी के अपार सहयोग से मेरा यह संपादन कार्य पूर्ण हो पाया है।

इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य हिंदी के प्रगामी प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ाना है एवं हम 'ख' क्षेत्र में होने के कारण हमारी राजभाषा (हिंदी) के प्रति प्रमुख जिम्मेदारी बनती है। अंचल में अधिक से अधिक हिंदी में कार्य हो मेरा ऐसा प्रयास रहता है। साथ ही इस प्रयास का दायित्व मेरे साथ- साथ आप सभी यूकोजन का भी है। जब शाखाओं का राजभाषा निरीक्षण किया जाता है तो शाखाओं में कई राजभाषा के नियमों का उल्लंघन पाया जाता है जैसे फ़ाइल एवं रजिस्टर पर लिखें जाने वाले नाम सिर्फ अँग्रेजी भाषा में होना, मोहरें एक ही भाषा में होना खासकर अँग्रेजी भाषा में उपलब्ध होती है उसका निरीक्षण कर त्रुटियों को दूर किया जाता है।

मेरे द्वारा इस प्रथम अंक में अंचल कार्यालय के अंतर्गत होने वाली विभिन्न गतिविधियों को चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है, साथ ही जिन साथियों ने अंचल की पत्रिका के लिए अपने लेख एवं कविता प्रस्तुत करें है, मैं उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूँ साथ की अन्य साथियों से भी निवेदन करता हूं कि आगामी पत्रिका के लिए वह अपने लेख प्रस्तुत करें।

अंत में, मैं इस अंचल के समस्त साथियों से निवेदन करूंगा कि अगर इस ई-पत्रिका में कुछ कमियाँ हो तो मुझे अवश्य अवगत कराएं ताकि अगला अंक और बेहतरीन ढंग से प्रस्तुत कर सकूँ।

शिवम उपाध्याय
प्रबंधक, राजभाषा
अंचल कार्यालय सूरत

दास्तान- ए - ज़िंदगी

अजीब सी उलझन है तू भी ए ज़िंदगी
समझने और समझाने से परे है ज़िंदगी
जब लगता है समझ आने लगी है ज़िंदगी
तभी नासमझ हो जाती है ये जिंदगी
उलझ कर रह जाता हु तुझे समझने की कोशिश में
ए ज़िंदगी
मजा तो तुझे भी आता होगा मुझे उलझाने में ए ज़िंदगी
जब लगता है कुछ नहीं है ये ज़िंदगी तभी एक नयी करवट ले लेती है
ये ज़िंदगी
जब एहसास होता है थक गया हूँ तेरा बोझ ढोते ढोते ए ज़िंदगी
जीने की नयी उमंग जगा देती है ये ज़िंदगी
कुछ खट्टे कुछ मीठे अनुभवों का फलसफा है ये ज़िंदगी
समझो तो बहुत कुछ ,ना समझो तो कुछ भी नहीं है ये ज़िंदगी
समय के साथ बहुत कुछ सीखा देती है ये ज़िंदगी
जीने की हर राह दिखा देती है ये ज़िंदगी
खुश रहने की वजह बता देती है ज़िंदगी
सबसे दूर अकेले खुश रहना भी सीखा देती है ज़िंदगी
और कितना लिखूँ तेरे बारे में ए ज़िंदगी
बस इतना ही कह सकता हूँ कभी न खत्म होने वाली दास्ताँ है ज़िंदगी
और जो खत्म हो जाए तो समझो मुक्कमल हुई ये ज़िंदगी।

राजेश कुमार राय
प्रबंधक

बैंकिंग क्षेत्र में साइबर सुरक्षा

भूमिका

21वीं सदी को डिजिटल युग के रूप में जाना जाता है। भारत भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा है। तकनीक और इंटरनेट के बढ़ते उपयोग ने बैंकिंग प्रणाली को तेज़, सुगम और ग्राहकों के अनुकूल बनाया है। इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल ऐप्स, एटीएम, यूपीआई और डिजिटल वॉलेट जैसे साधनों ने भारत में बैंकिंग सेवाओं को आम आदमी तक पहुंचाया है। लेकिन इस डिजिटल क्रांति के साथ-साथ साइबर अपराधों की घटनाएं भी तेजी से बढ़ी हैं, जिससे बैंकिंग क्षेत्र में साइबर सुरक्षा की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक हो गई है।

साइबर सुरक्षा क्या है?

साइबर सुरक्षा एक ऐसा तकनीकी, प्रबंधकीय और कानूनी ढांचा है, जिसके माध्यम से कंप्यूटर नेटवर्क, डाटा, सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर को साइबर हमलों से सुरक्षित किया जाता है। जब हम इसे बैंकिंग के संदर्भ में देखते हैं, तो इसका अर्थ होता है – बैंकिंग सिस्टम, सर्वर, ग्राहक जानकारी और ऑनलाइन लेन-देन को हैकिंग, मालवेयर, फिशिंग, रैनसमवेयर, पहचान की चोरी और डेटा लीक जैसे खतरों से सुरक्षित रखना।

भारत में साइबर सुरक्षा की आवश्यकता क्यों है?

भारत में डिजिटल भुगतान और इंटरनेट बैंकिंग के उपयोग में विस्फोटक वृद्धि हुई है। वर्तमान में भारत दुनिया के शीर्ष डिजिटल भुगतान देशों में शामिल है। इसके साथ ही भारत का फिनटेक बाजार दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा है। इस विस्तार ने भारत के बैंकिंग सेक्टर को साइबर अपराधियों के लिए एक "लाभकारी लक्ष्य" बना दिया है। इसके पीछे कई कारण हैं:

ग्राहकों की संवेदनशील जानकारी जैसे कि OTP, पासवर्ड, कार्ड विवरण आदि का डिजिटल प्लेटफॉर्म पर मौजूद होना।

कम जागरूकता के कारण उपभोक्ता आसानी से धोखाधड़ी का शिकार हो जाते हैं।

बैंकिंग प्रणाली की इंटरकनेक्टिविटी – एक बैंक की चूक से पूरी वित्तीय प्रणाली खतरे में पड़ सकती है।

कानूनी और तकनीकी संरचना की सीमाएं – कई बार अपराधियों तक पहुँच पाना मुश्किल हो जाता है, खासकर जब वे विदेशी होते हैं।

भारत में साइबर अपराध के प्रकार

1. फिशिंग और विशिंग: फर्जी ईमेल या कॉल करके ग्राहकों से बैंकिंग विवरण प्राप्त करना।

2. मालवेयर और रैन्समवेयर: वायरस द्वारा बैंक सिस्टम में घुसपैठ कर डेटा चुराना या लॉक कर देना।

3. एटीएम स्किमिंग: एटीएम में डिवाइस लगाकर कार्ड की क्लोनिंग करना।

4. सिम स्वैप फ्रॉड: उपभोक्ता की सिम को डुप्लीकेट बनाकर ओटीपी और बैंकिंग एक्सेस लेना।

5. डेटा ब्रीच: बैंकों के सर्वर से ग्राहकों की जानकारी चोरी होना।

6. इनसाइडर थ्रेट: बैंक कर्मचारियों द्वारा सिस्टम का दुरुपयोग या डेटा लीक करना।

प्रमुख साइबर अपराध घटनाएं

कॉसमॉस बैंक हमला (2018): पुणे स्थित बैंक से ₹94 करोड़ की चोरी, 28 देशों में एटीएम से नकद निकासी।

केनरा बैंक डाटा लीक (2016): लाखों ग्राहकों के डेबिट कार्ड का डाटा चोरी हुआ।

पीएमसी बैंक धोखाधड़ी (2019): डिजिटल रिकॉर्ड में हेराफेरी कर के ₹6,500 करोड़ की अनियमितताएं सामने आईं।

जामताड़ा गिरोह (झारखंड): यह स्थान फिशिंग कॉल द्वारा देशभर में ऑनलाइन बैंक फ्रॉड के लिए कुख्यात है।

सरकार और रिज़र्व बैंक द्वारा उठाए गए कदम

1. भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI):

साइबर सुरक्षा ढांचा (2016): सभी बैंकों को एक न्यूनतम साइबर सुरक्षा ढांचा अपनाना अनिवार्य किया गया।

आईटी ऑडिट अनिवार्य: बैंकों को नियमित अंतराल पर आईटी और साइबर ऑडिट कराना अनिवार्य किया गया।

डिजिटल पेमेंट सुरक्षा नियंत्रण (2021): यूपीआई, कार्ड और मोबाइल पेमेंट के लिए सख्त दिशानिर्देश लागू किए गए।

2. CERT-In (Indian Computer Emergency Response Team):

भारत सरकार की साइबर घटना प्रतिक्रिया एजेंसी, जो बैंकों को अलर्ट और सलाह प्रदान करती है।

साइबर हमलों का समय पर पता लगाने और निवारण में मदद करती है।

3. राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति (NCSP):

देशभर में साइबर सुरक्षा की क्षमता बढ़ाने, जनजागरूकता फैलाने, और प्रशिक्षण देने के लिए नीति लागू की गई।

सरकारी और निजी क्षेत्रों के बीच साझेदारी को प्रोत्साहन दिया गया।

चुनौतियाँ

तकनीकी विशेषज्ञों की कमी: भारत में प्रशिक्षित साइबर सुरक्षा पेशेवरों की भारी कमी है।

ग्राहकों में जागरूकता की कमी: विशेषकर ग्रामीण और बुजुर्ग ग्राहकों में डिजिटल जोखिमों की समझ कम है।

तेजी से बदलती तकनीक: नई तकनीक आने के साथ ही नए साइबर खतरे भी उभरते हैं।

सीमा पार से अपराध: कई साइबर हमले विदेशों से होते हैं, जिससे अपराधियों को पकड़ना कठिन होता है।

संपर्क का अभाव: बैंकों, तकनीकी एजेंसियों और कानून व्यवस्था के बीच त्वरित समन्वय की कमी।

समाधान और सुझाव

1. प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम – ग्राहकों और बैंक कर्मचारियों को साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक बनाना।

2. मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन – सिर्फ पासवर्ड नहीं, बल्कि OTP, बायोमेट्रिक आदि की अनिवार्यता।

3. एथिकल हैकिंग और पेन-टेस्टिंग – बैंकों को नियमित रूप से अपने सिस्टम की सुरक्षा जांच करानी चाहिए।

4. AI और मशीन लर्निंग आधारित निगरानी – संदिग्ध गतिविधियों का रियल-टाइम विश्लेषण और रोकथाम।

5. बैंकों के बीच सहयोगी नेटवर्क – सूचना साझा करना, ताकि एक बैंक की गलती से बाकी सुरक्षित रहें।

6. साइबर अपराधों के लिए त्वरित न्याय प्रणाली – साइबर अपराधों की त्वरित सुनवाई के लिए विशेष न्यायालय स्थापित किए जाएं।

निष्कर्ष

भारत तेजी से डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है, और बैंकिंग इसका मूल स्तंभ है। हालांकि तकनीक ने सेवाओं को तेज और आसान बनाया है, परंतु इसके साथ जोखिम भी बढ़े हैं। इसलिए बैंकिंग क्षेत्र में साइबर सुरक्षा को मज़बूती देना समय की आवश्यकता है। इसमें सरकार, बैंक, ग्राहक और तकनीकी विशेषज्ञों को मिलकर सामूहिक प्रयास करना होगा।

एक मज़बूत साइबर सुरक्षा प्रणाली न केवल वित्तीय नुकसान को रोकेगी, बल्कि ग्राहकों का विश्वास और देश की आर्थिक स्थिरता भी बनाए रखेगी। भविष्य के लिए एक सुरक्षित और डिजिटल बैंकिंग प्रणाली का निर्माण तभी संभव है जब सुरक्षा और तकनीक दोनों साथ-साथ चलें।

संदीप कुमार वर्मा
प्रबंधक, यूको बैंक

विकसित भारत बैंकों की भूमिका

विश्व का सबसे पुराना प्रजातांत्रिक, सबसे अधिक जनसंख्याधारी और सबसे तेज विकास की गति वाला हमारा महान देश, भारत दुनियाँ का सबसे बड़ा बाज़ार भी है। बाज़ार में व्यापार, व्यापार में लेन-देन, लेन-देन में राशि का उपयोग और राशि के लिए बैंक, मानो मानव शरीर के लिए प्राणवायु की तरह है। बैंक, किसी भी देश के आर्थिक विकास का मेरुदंड है। सरकारों के विकास की तमाम योजनाओं को अमलीजामा पहनाने में बैंकों की अहम भूमिका रहती है।

इसी कड़ी में "विकसित भारत@ 2047" अभी भारत सरकार की एक पहल है, जिसमें सामुदायिक भागीदारी के साथ देश को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में खड़ा कर देने का लक्ष्य है। सन 2047,यानि स्वतंत्रता की 100 वीं वर्षगांठ तक आर्थिक वृद्धि, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विकास के समग्र पहलुओं के फलाफल स्वरूप अपने वतन, भारत को सबके प्रयास से हमें एक सर्वोत्कृष्ट विकसित राष्ट्र बनाना है।

वर्तमान दशक को भारत वर्ष का अमृत काल माना जाता है। इसमें कई मोर्चों पर भारत बादल चुका है है, सामाजिक और आर्थिक बुनियादी ढांचो में बड़े पैमाने पर बदलाव के लिये सशक्त नीतियों के साथ-साथ सफल क्रियान्वयन के चलते यह तेज विस्तार के विकास की राहों पर फ़र्राटे में अग्रगामी दौड़ लगा रहा है, जिसका वैश्विक संस्थाये भी प्रमाणित गवाह बन चुकी हैं।

आज हमारा भारत, वैश्विकइतिहास के सर्वोत्कृष्ट मोड़ पर पुनः "गुरुता" की गरिमा के साथ स्वर्णिम अध्याय लिख रहा है। " 21 वीं सदी, भारत की सदी" के उद्घोष के साथ विगत वर्षों में हम दुनिया की 5वीं आर्थिक शक्ति, कोविड टीका का विनिर्माण व जगत कल्याण में वितरण कर फार्मासिस्ट शक्ति, चाँद के पार तक पहुँच, शिव-शक्ति पॉइंट पर तिरंगा लहरा कर वैश्विक विज्ञान शक्ति की क्षमता की झलक के साथ सन 2027 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने पर हमारा देश द्रुतगामी है। वह दिन दूर नहीं, जब हमारा सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी) 5 ट्रिलियन डॉलर को पार करते हुये, 2047 तक 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से भी अधिक हो जायेगी।

भारत के इस सर्वाधिक गतिमान विकास की आंतरिक ऊर्जा का सर्वमान्य प्रमुख स्त्रोत या यूं कहें कि विकसित भारत के आर्थिक तथा बुनियादी ढांचे कि प्रथम कड़ी का मजबूत स्तंभ, हमारी "बैंकिंग प्रणाली" है। जिसके माध्यम से भारत सरकार जन कल्याणकारी योजनाए, इनफ्रास्ट्रक्चर और औद्योगिक विकास की महत्वकांक्षी योजनाओं को अमल में लाते हुए नई-नई सफलताओं की रहें सृजित कर रही है।

विज्ञान की इस क्रांति ने समूची दुनियाँ को समेत कर प्रत्येक घर के ड्राइंग रूम के तबल पर रख छोड़ा है। सरकार के सद्प्रयास से भारत का हर शहर, हर गाँव का घर-घर इस, स्वप्निल उड़ान का सहभागी बन रहा है।

विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाला कृषि प्रधान देश, भारत की आत्मा गाँवों में निवास करती है, क्योंकि अभी भी लगभग 70% आबादी के नागरिक व कृषक गाँवों में ही रहते है। इसलिए स्वभात: हमारे देश की अर्थव्यवस्था में गाँवों का सबसे बड़ा योगदान रहा है। कुटीर उद्योग, छोटे व मंझले उद्योगो के साथ कृषि को मिलकर भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी) और रोजगार सृजन में ग्रामीण क्षेत्र की भागीदारी सर्वाधिक है।

एक समय था, जब भारतीय गणराज्य के प्रधानमंत्री ने संसद में स्वीकारा था कि केंद्र सरकार द्वारा नागरिकों के कल्याणअर्थ प्रेषित 100 पैसे, छीजते – छीजते धरातल पर योजना में 15 पैसे कि लागत बन क्रयान्वित होता है। लेकिन अब बैंकिंग सेक्टर ने सरकार को विश्व रिकॉर्ड, जन-धन एवं अन्य खाते खोलकर सरकार को डी.बी.टी.एस के माध्यम से इस असाध्य रोग से मुक्ति दिलाते हुए मिनटों में शतप्रतिशत राशि, सीधे लाभार्थी के खातों में दाल, देश के विकास रथ को नई गति दी है।

हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, नीली क्रांति, इलेक्ट्रानिक व संचार क्रांति की कतार के अगले पायदान पीआर केंद्र तथा राज्य सरकारों के नागरिकों के गर्भस्थ शिशु के रूप में जीवन के पूर्व से लेकर उसके वृद्धावस्था बाद के मरणोपरांत तक की आने योजनाओं के साथ आधी आवादी, यानि महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक शेक्षिक, राजनेटिक उत्थान के निमित्त चलायी जा रही अनेक जन कल्याणकारी योजनाओं को बीते दिन धरातल पर शतप्रतिशत क्रियान्वित करने में बैंकिंग सेक्टर मील का पत्थर साबित हुएहैं। इसके अनेकों में एक उदाहरण निम्न है:- "संपूर्ण भारत के किसानों के खातों में अबतक 03.45 लाख करोड़ रुपये किसान सम्मान निधि योजना के तहत, सीधे डाले जा चुके हैं।

स्वतंत्रा दिवस, 2014, लालकिले के प्राचीर से माननीय प्रधानमंत्री जी की घोषणा को सर-माथे पर लेते हुए बैंक कर्मी/अधिकारियों ने असंभव से लग रहे 40 करोड़ जन-धन खाते खोलकर दुनिया में रिकॉर्ड बनाया है। इतना ही नहीं, छूटे हुए ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँच बनाने के लिए 13,517 ग्रामीण बैंकों की नई शाखाएं खोली गई। परिणामत: देश में सामाजिक, औद्योगिक और विनिवेश क्रांति की बाढ़ सी आ गयी है।

विकास की गति के मामले में भी दुनियाँ में शीर्ष स्थान पर आसीन हमारे भारत में आज 30 करोड़ एकीकृत भुगतान इंटरफेस (यू.पी.आई) उपयोग करता हैं। यह प्रतिमाह 1 हज़ार करोड़ का लेन-देन करते हैं और यह लेन-देन सकाल घरेलु लेन-देन का 40% से अधिक है, जो विश्वस्तरीय है। इस डिजिटल क्रांति ने, तो चंद वर्षों में ही भारत वर्ष की दशा व दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन ल दिया है। सुदूर देहात की गुदड़ि हाट या सड़क के किनारे बैठकर, डलिया में साग-सब्जी बेचने वाली से लेकर बड़े औद्योगिक घराने तक के भारतीय सुरक्षित डिजिटल लेन-देन को ही प्राथमिकता देते हैं।

इस क्रम में “ मेक इन इंडिया” भी हमारी सरकार की एक महत्वकांक्षी योजना है। जिसका मकसद देश को विनिर्माण का केंद्र बनाना और रोजगार सृजन की अनंत संभावनाये पैदा करना है।इसके तहत “प्रधानमंत्री मुद्रा योजना” या “प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना” छोटे उद्यमियों के लिये तथा बड़े उद्यमियों के लिये एम.एस.एम.ई पॉलिसी के अधीन क्रमश: बड़ी एवं छोटी वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। ऐसे में छोटी या बड़ी वित्तीय सहायता के लिये बैंकों की भागीदारी की सार्वभौमिकता को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

इस के मद्देनजर, केंद्रीय बजट 2025-26 में सरकार ने नए एम.एस.एम.ई वर्गिकरण मानदंडों की घोषणा की है, जिसमें निवेश और कारोबार की सीमा को क्रमश: 2.5 और 2 गुना बढ़ाया जाएगा। इससे एमएसएमई को उच्चतर कार्यकुशलता, तकनीकि उन्नयन और पूंजी तक बेहतर पहुँच प्राप्त करने में सहयोग मिलेगा।

इसी बजट में सूक्ष्म एवं लघु व्यवसायियों के लिये ऋण गारंटी कवर 5 करोड़ से बढ़ाकर 10 करोड़ कर दिया है, जिससे उन्हें आर्थिक बोझ का सामना नहीं करना पड़े और बैंकों को भी उन्हें ज्यादा से ज्यादा ऋण उपलब्ध कराने में सक्षमता प्राप्त हो सके। उधर उद्यम पोर्टल पर पंजीकृत सूक्ष्म उद्यमों के लिये 5 लाख की सीमा वाले 10 लाख कस्टामाइज्ड क्रेडिट कार्ड शुरू किए जाएगे, जिसमें भी बैंकों की भूमिका अति महत्वपूर्ण व सराहनीय होने जा रही है।

यह कहना अतिशोयक्ति पूर्ण नहीं है कि बैंकिंग सेक्टर, माँ भारत-भारती की रक्त वाहिका धमनियों की तरह कार्य करता है, जो बड़े से लेकर सूक्ष्मतम हर एक अंग रूपी उद्यमी तक, सुचारु और लगातार रक्त संचार क्रियान्वित कर संपूर्ण शरीर को तरोताजा रखता है, यानि की उद्यमों का आधार, वित्त का योजनानुसार निर्बाध पोषण करता है।

"सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास" के मूल मंत्र साथ "विकसित भारत@ 2047" को स्वर्णिम लक्ष्य की प्राप्ति में युवा भारत के युवाओं और माध्यम वर्ग के नागरिकों की निर्णायक भूमिका होनी तयशुदा है। इसकी झांकी स्वरूप, कुछ दिनो पूर्व संसद में मिडिल क्लास के लिए ऐतीहासिक राहत देनेवाले बजट की घोषणाओं ने तो 5 फरवरी को संपन्न, दिल्ली विधान सभा चुनाव का परिदृश्य ही बादल डाला है। क्योंकि दिनांक 8 फरवरी 2025 को चुनावी नतीजों के बाद सारे के सारे सर्वेक्षणों द्वारा ऐसे एकतरफा चुनाव परिणाम के मूल में, बजट की गई घोसणाओं को, एक पार्टी विशेष की जीत का प्रमुख कारण बताया है।

इसी क्रम में कुछ दिनों बाद भारतीय रिजर्व बैंक ने रेपों रेट में 0.25% कमी की घोषणा की है, जिसके अंतर्गत अब सस्ते ब्याज दरों पर सभी खुदरा ऋण मध्यम वर्ग के लोगों के लिये उपलब्ध रहेंगे। फलतः उनके खुद के मकान की स्व्प्नापूर्ति हो सकेगी और यह सरकार के " सब के लिये खुद का आवास" मीशन को भी सफल करेगी और इस कड़ी में भी बैंकों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।
इस प्रकार सबसे बड़ी वैश्विक आबादी का देश, भारत में सर्वाधिक मिडिल क्लास की संख्या, साथ में युवा भारतियों की बृहत आबादी का सतत अग्रगामी विकास, "विकसित भारत @2047" की सर्वाधिक मजबूत नींव है और दुनियाँ की नजरों में हमारी यही बड़ी आबादी सबसे बड़ा बाजार है तथा इस बाज़ार को संचालित करने में हमारे बैंकों की भूमिका अकल्पनीय व अविस्मरणीय रहने वाली है।

अनुराग रमन

वरिष्ठ प्रबंधक

नारीत्व का पर्व— रज पर्व

हमारे देश ने पूरे विश्व में अपनी संस्कृति को लेकर एक खास जगह बनाई है। ये सिर्फ एक देश ही नहीं, बल्कि विभिन्न संस्कृति और परंपरा की भूमि है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता वाला देश है। भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व अच्छे शिष्टाचार, तहजीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएं और नैतिक मूल्य आदि हैं। हमारे देश के लोगों ने अपनी संस्कृति के जरिए "विविधता में एकता" को अक्षुण रखा है। हमारे देश के हर एक राज्य में अलग-अलग भाषाएं तथा उनके अपने-अपने त्योहार हैं और सारे त्योहार अपने आप में खास हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप में हमारा राज्य "ओड़ीसा" अपने मंदिर परिसर, त्योहार, आदिवासी रीति-रिवाजों, शानदार समुद्र तटों, उपजाऊ नदी घाटियों, झरनों, झीलों और वन्यजीव अभयारण्यों के लिए मुख्य रूप से लोकप्रिय है। यहाँ के लोग हर त्योहार को बड़े उत्साह से और पारंपरिक रूप से मनाते हैं। ओड़ीसा देश में मनाए जाने वाले लगभग सभी त्योहारों में भाग लेता है। ओड़ीसा में मनाए जाने वाले त्योहार हमारे देश की मजबूत और समग्र सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। ओड़ीसा के कुछ प्रमुख त्योहार हैं – रथयात्रा, मकर संक्रांति, कुमार पूर्णिमा, दीपावली, अमावस्या, दुर्गा पूजा, कलिंग महोत्सव, चंदन यात्रा, रज पर्व आदि। इनमें से ज्यादातर पर्वों को सभी जानते हैं। लेकिन " रज पर्व" के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। चलिये जानते हैं इस अनोखे पर्व के बारे में।

परिचय – यह एक तीन दिन चलने वाला त्योहार है, जो नारीत्व को परिभाषित करता है। यह पर्व आषाढ़ के महीने में मिथुन संक्रांति पे मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है की पृथ्वी माता या भूदेवी इन तीन दिनों में मासिक धर्म से गुजरती है। चौथे दिन को वसुमती स्नान के रूप में जाना जाता है। रज शब्द एक संस्कृत शब्द " रजस" से आया है जिसका अर्थ है मासिक धर्म और जब एक महिला को मासिक धर्म होता है उसे " राजस्वला" कहा जाता है और मध्ययुगीन काल में यह त्योहार कृषि अवकाश के रूप में अधिक लोकप्रिय हो गया, जो की भूदेवी की पूजा का प्रतीक है।

विशेषता-

आषाढ़ के महीने को दांपत्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ संभोग का महीना माना जाता है। आषाढ़ का महीना वर्षा के आगमन को भी दर्शाता है। बारिश के आने से मेघ और माटी का मिलन होता है। धरती माता होती है " राजस्वला" इससे मिट्टी की प्रजनन क्षमता बढ़ती है और कई किस्म की फसल उपजती है। जैसे एक माँ को प्रजनन से पहले विश्राम की आवश्यकता होती है ठीक वैसे ही प्रजननक्षम होने जा रही धरती माता को रज पर्व में तीन दिन के लिए विश्राम दिया जाने का विश्वास है।

पर्व के पालन का विवरण:-

सजबाज- रज पर्व हर साल जून के महीने में द्वितीय या तृतीय सप्ताह में पड़ता है। यह एक तीन दिवसीय उत्सव है। उत्सव के पूर्व दिन को " सजबाज" यानी प्रस्तुति तथा श्रृंगार का दिन माना जाता है। उस दिन को आने वाले तीन दिन के त्योहार की ज्यादातर प्रस्तुति दी जाती है। जैसे घर और रसोई को साफ करना, अगले तीन दिन के लिए मसाले पीसकर रखना आदि, क्योंकि त्योहार के इन तीन दिनों में किसी भी महिला को मसाले पीसने और सब्जी काटने की मनाही होती है। किसान अपने कृषि के औजार भी साफ करके रखते हैं। इन तीन दिनों में कृषि कार्य भी नहीं किया जाता, क्यूंकी यह भूदेवी का पर्व है और ऐसा कोई भी काम नहीं होता जिससे भूदेवी को कष्ट पहुंचे।

त्योहार के पहले दिन को पहिली राज (प्रथम रज) बोलते हैं। दूसरे दिन को रज संक्रांति या मिथुन संक्रांति के नाम से जाना जाता है। इन डीनो में महिलाएं, खास तौर पर कुंवारी लड़कियाँ सजधज के नए कपड़े और गहने पहन कर, मेहंदी आलता लगा कर तैयार होती हैं। इस पर्व के साथ कुंवारी लड़कियों के माता-पिता के मन में भी उत्साह रहता है, क्योंकि इस पर्व में उनकी बेटियों के लिए विवाह प्रस्ताव भी अपेक्षित होते हैं। चूंकि यह एक गण पर्व है, इसलिए परिवार के सभी सगे-संबंधी इस त्योहार में इकट्ठे होकर इसका पालन करते हैं। यह तीन दिन लड़कियाँ झूलों झूलती है और लड़के कबड्डी, ताश जैसे खेलों में मसगुल रहते हैं। इस पर्व के दौरान हर घर में तरह- तरह के पकवान बनते हैं।

रज पर्व में ज्यादा उत्साह ओड़ीसा के गांवों में आता है। जो भी काम – काज के लिए अपने गाँव से दूर जाते हैं, वह इस पर्व को मनाने के लिए अपने घर वापिस आते हैं। इस झूलों के पर्व में गाँव- गाँव में तरह- तरह के झूले बनते हैं, जैसे राम झूला, दांडी झूला, चक्री झूला, पटा झूला आदि। रज महोत्सव के लिए स्वतंत्र लोकगीत भी हैं जो की लड़कियों व महिलाओं द्वारा गाये जाते हैं।

"

त्योहार का आखरी दिन तथा चौथे दिन को वसुमती स्नान के नाम से जाना जाता है। इस दिन में वसुधा माता को शुद्ध स्नान कराया जाता है, ठीक उसे प्रकार जैसे मासिक धर्म के बाद एक महिला स्नान करती है। इस दिन मसाला पीसने वाले मूसल को धरती माता का स्वरूप मान कर नहलाया जाता है और हल्दी-सिंदूर, काजल आदि से सजाया जाता है। आगे साल भर आने वाली प्रगति का विश्वास लिए धरती माता की पूजा होती है एवं पूरे ओड़ीसा में यह त्योहार हर्षोउल्लास से मनाया जाता है।

रज पर्व के विशेष पकवान :-

रज पान - ओड़ीसा राज्य के आराध्य देवता तथा पालनकर्ता प्रभु श्री जगन्नाथ भी अपने भोजन पश्चात पान का सेवन कर निद्रा जाते हैं। तो फिर ओड़ीसा के त्योहारों में भला पान के स्वाद कैसे न हो। रज पर्व में पान खाना और खिलना एक प्राचीन परंपरा है। इसका महत्व रिश्तों को जोड़ना होता है। साधारण पान से रज महोत्सव में पान खाना खास होता है।

पोड पीठा और अन्य पीठा :- ओड़ीसा में पीठा हर घर में खाया जाता है और इसका अपना एक स्वतंत्र स्थान है। यह साधारणत: चावल, सूजी, गुड़, नारियल आदि से बनाया जाता है।

निष्कर्ष

ओड़ीसा में एक कहावत है " बारह महीने में तेरह पर्व" और रज पर्व उन त्योहारों में चार चाँद लगता है। अपनी संस्कृति और परंपराओं के लिए खास माने जाने वाले ओड़ीसा राज्य का यह त्योहार " रज पर्व" भी खास है जो की नारीत्व का प्रतीक है। यह अपने में ही एक परंपरा है।

श्रीमती अद्याशा प्रियदर्शनी दास

प्रबंधक

सपनें 75 पार के, जो बेचैन किये रहते......

"जानती हो, 'कर्माटाँड़' स्टेशन का नाम बदलकर 'विद्यासागर कर दिया गया है।" - सुबह की चाय की चुश्कियों के बीच, समाचार पत्र पढ़ते हुए, एक दिन मेरे दादा जी ने दादी माँ को सूचना दी। "अच्छा-अच्छा, नंदन कान के चलते, क्या ? दादी माँ के प्रतिप्रश्न पर दादा जी ने कहा था, "हाँ, 'ईश्वर चंद्र विद्यासागर के प्रति सरकार की यह सच्ची श्रद्धांजलि है।" तबतक दादी माँ के सटे बैठा, मेरा बालमन और मैं उनके गले से लिपट जिज्ञासा की सीमा के पार, प्रश्नों की झड़ियों की बौछारों से पूछता जा रहा था. "ये 'नंदन कानन,' क्या है, कौन हैं, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, दादी माँ? विद्या के अथाह सागर, ईश्वर चंद्र, एक अति तीक्ष्ण व कुशाग्र बुद्धिमत्ता युक्त धनी व्यक्तित्व के महापुरुष थे, जो शैशवावस्था से ही सभी क्रियाशीलनों में सर्वोत्कृष्ट स्थान प्राप्त करनेवाले बालक, छात्र के आगे वे इस भारतीय उप महाद्वीप के एक महान दार्शनिक, प्रखर लेखक और प्रसिद्ध समाज सुधारक थे।" दादी माँ के ऐसे जबाब ने शांति के बजाय जिज्ञासाग्नि में घी डाल मेरी बेचैनी को सातवें आसमान की ऊँचाई दे दी थी, जिसे अब प्यारे दद्दू ही मिटा सकते थे।

....दरअसल, मेरे दादा जी एवं दादी माँ, दोनों विगत अस्सी के दशक में पूज्य बापू की कल्पनानुरुप स्थापित, 'बुनियादी तालीम के विद्यालयों में से एक बुनियादी विद्यालय, कर्माटाँड़, तात्कालीन संथाल परगना जिला, बिहार में बतौर सहायक शिक्षक पद पर पदस्थापित थे। ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी ने करमाटाड़ में भी घर बनाया था, जिसका नाम 'नंदन कानन था और यहीं से उन्होंने आदिवासियों के बीच रहकर उनके उत्थान के लिये कई अनुकरणीय कार्य किये थे। यहाँ के रेलवे स्टेशन का नाम कर्माटांड़ था, जिसे महान् ईश्वर चंद्र विद्यासागर की स्मृति में बदलकर अब विद्यासागर रेलवे स्टेशन कर दिया गया है। अभी झारखंड के जामताड़ा जिले का यह स्टेशन, पूर्व रेलवे के आसनसोल डिवीज़न अंतर्गत मधुपुर जं.- जामताड़ा रेलवे खंड पर अवस्थित है, जिसके पुनर्नामकरण की दादा-दादी माँ की चर्चाओं के बीच मेरी जिज्ञासायें टाँग अड़ाती जा रही थीं।

...हाँ...तो क्या हुआ? ...कोई भी बालक/बालिका, एकाग्रचित लगन, कड़ी मिहनत, कठोर अनुशासन, समय का सटीक प्रबंधन के बल, अपने अंदर ज्ञानार्जन के जूनून की सफल सवारी कर विद्यासागर बन सकता/सकती है। ... अपने परिवार में ही, ...तो इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है...। "परिवार में?" - सुनते ही मेरी शांति की ओर अग्रसर होती ज्ञानपिपासा एकाएक उफान पर चढ़, दादा जी के होठों से चिपकते हुए अगले वाक्य प्रवाहित होने की व्याकुल प्रतीक्षा करने लगा था। इसके बाद दादा जी से, जो सत्यकथा मैंने सुनी तथा व्याकुलता, जो परवान चढ़ी, वह कथानायक से मिलने की उत्सुकता के साथ उनके कथित, अनुकरणीय जीवनचर्या, मेरी जीवनयात्रा को मार्गदर्शित और संस्मरणों को सदैव ताजा व जीवंत करती रहेगी।

कहा है, “लक्ष्मी-सरस्वती में मेल नहीं, दोनों एकजगह, एकसाथ कभी नहीं रहतीं, यानि एक ही परिवार में दौलत और विद्या एकसाथ नहीं होती ।"- दादा जी के होठ, अपने परिवार की सत्यकथा वाचन के लिये वेगवर्द्धन संग थिरकना प्रारंभ कर चुके थे और मैं, शांतचित्त एकग्रता की आगोश में शनैः शनैः जकड़ता चला जारहा था । - द्वापर में विष्णु अवतार के पूर्व देवों, गंधर्वों, यक्षों, गणों आदि को विभिन्न प्रयोजनों के निहितार्थ भिन्न-भिन्न योनियों (गोप-गोपी, वृक्ष-लतायें आदि) में प्रकटीकरण की भांति, माँ भारती ने मानो आज़ादी के बाद की तैयारी के क्रम में दो सप्ताह पहले, यानि 02 अगस्त 1947 को बिहार के तात्कालीन भागलपुर जिला का बाँका अनुमंडल (अब जिला) के धोरैया थाना का सुदूर, अति पिछड़ा गाँव, अस्सी में एक अत्यंत गरीबी में जीवन बसर करनेवाली सरस्वती सिन्हा व चंद्रमोहन सिन्हा के परिवारिक अंगना में पौत्ररत्न, 'उदय नारायण सिन्हा को उदयमान किया ।"

लक्ष्मी नारायण सिन्हा, मेरे दादा जी के 'लंगोटिया यार' (जिगरी दोस्त) थे। यारी ऐसी कि मेरे दादा जी की यादें सदा ताज़ी रखने के लिये उन्होने अपने द्वितीय सुपुत्र का नाम, हू-ब-हू मेरे दादाजी के नाम का (श्री राम नारायण सिन्हा) रखा था। क्योंकि माँ, सुचारु सिन्हा व पिता लक्ष्मी नारायण सिन्हा के प्रथम सुपुत्र, उदय नारायण सिन्हा का नामकरण उनके सर्वथा प्रिय दादाश्री, चंद्रमोहन सिन्हा जी ने स्वाधिकाराधीन सुरक्षित कर रखा था, इसलिये प्रथम सुपुत्र के नामकरण में उनकी लाचारी थी। बसुदेव-नंद की तरह, हमारी भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में दोस्ती के रिश्ते, खूनी रिश्तों से कमतर कभी नहीं आंके जाते, इसीलिये उदय नारायण सिन्हा जी को मेरे दादा जी अपने परिवार का विद्यासागर कहा करते थे।

उर्दू बाजार, भागलपुर में एक किराये के मकान में शिशु उदय का लालन-पालन शुरु हुआ। उनके पिता जी स्टेशन चौक के भारत बुक डिपो में बहुत कम वेतनभोगी मुंशी थे और बड़े परिवार का खर्च अधिक था। फलतः परिवार के भरण पोषण में पैसे की तंगी के चलते काफी परेशानी हो रही थी, फलस्वरुप शैशवास्था में ही उदय अपने गाँव अस्सी लाये गये, जहाँ अत्यंत गरीबी से बेपरवाह दादा-दादी के सानिध्यक वात्सल्य से घिरे वातावरण में उत्कृष्ट संस्कारों की नींव पड़नी शरु हुई ।

कहा जाता है, "होनहार बिरवान के होत चिकने पात" पूजा करते दादा जी द्वारा उच्चारित मंत्र, भजन, वेद की ऋचायें, रामायण के दोहे, गीता के श्लोक दादी माँ की वंदना, आरती आदि बालपौत्र, उदय को तत्क्षण श्रुत्कंठस्थ हो जाया करता था। दादा जी को वैद्यकीय से दोजून की रोटी मयस्सर नहीं होती, तो पौत्र को पठन सामग्री की उपलब्धता की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। लेकिन बालक, उदय के प्रथम पाठशला (दादा-दादी जी की गोद) के मुख्याध्यापक, दादाजी ने हिम्मत नहीं हारी, घिसे नारियली झाड़ू की सिक्कियों की कलम, माँ वसुंधरा के वक्ष की पट्टी और दादा जी के पंजे का झाड़न और स्वयं विद्या की देवी स्वरुपा, दादी माँ, सरस्वती की गोद, बैठने की आसनी से बड़ा, भला पाठ्य उपस्कर क्या हो सकता है?

तमसा नदी तट पर शिष्य भारद्वाज के साथ स्नानार्थ गये महर्षि बाल्मीकि द्वारा मिथुनावस्था में बहेलिये के तीर से तड़पकर मृत्युप्राप्त किये, नर और उसकी वियोगाग्नि में विलाप करती, मादा क्रौंच पक्षी को देखते ही उनके श्रीमुख से बहेलिये के लिये, अनायास निकला शापित वाक्य, जो पहले काव्य उसके बाद अंततः सृष्टि का पहला श्लोक के साथ घोषित हुआ बुद्धिवर्धक मंत्र--

" [ॐ] मानिषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौंच मिथुनादेकमवधी काममोहितम् ।।"

- का जाप के साथ, गोसांई घर में पूजनोप्रांत भाल पर रक्तचंदन व अच्छद का तिलक लगा, अरग (भोजन पकाने के निमित्त निकाले गये कच्चे खाद्य के दाने से सुबह-शाम एक-एक मुट्ठी कर जमा किया गया अन्न) बेचकर खरीदे गये स्लेट, पिलसीन और मनोहर पोथी (पाठ्य पुस्तक), जो चढ़ावे के रुप में गोसाई के सामने रखे गये थे, को उठाकर प्रपौत्र के हाथ में रख, दादी माँ दौड़ती ताखे पर रखी पोटली खोलने गई, ताकि आज स्कूल के पहले दिन प्रपौत्र के हाथों कुछ शुगुन (द्रव्य) दिया जा सके, लेकिन पोटली खाली मिली। फिर भी दादी माँ तनिक निराश न हुई और गर्व से कहा, "आज मेरी गुदड़ी में अधेली भी नहीं, तो क्या हुआ 'मेरी गुदड़ी के लाल' को ही शगुन स्वरुप मैं विद्या की देवी को भेंट करती हूँ।"और दादी माँ सरस्वती सिन्हा का भरपूर आशीर्वाद लेकर दादा जी, चंद्रमोहन सिन्हा की अंगुली थामे, दोनों पूज्यों की 'गुदड़ी का लाल' विद्या के अर्थ की खोज में विद्यार्थी उदय घर से पहला दिन, पहला विद्यालय को चल पड़ा।

घर के पाठशाला की पढ़ाई खूब रंग लाई और नामांकन के पहले दिन से ही सभी विषयों के प्रश्नों के हाजिर जबाबी के चलते नया छात्र, उदय अपने शिक्षकों का शीघ्र ही नाक का बाल बन गया। लिखित, मौखिक, सावधिक, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक आदि सभी परीक्षाओं में प्रथम आनेवाले उदय ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वर्ग 03 में और वर्ग 06 की छात्रवृत्ति परीक्षाओं में टॉप कर छात्र उदय नारायण सिन्हा ने दादा जी के साथ-साथ पारिवारिक सदस्यों, शुचिंतकों, अपने गाँव विद्यालय व उनके शिक्षकों को गौरवान्वित किया। पश्चात् देवी माँ सरस्वती वरद छात्र, दादी माँ सरस्वती सिन्हा व दादा, चन्द्रमोहन सिन्हा का गौरव बाल्यावस्था के पार, किशोर की दहलीज को बढ़ते लाड़ले, 'उदय' को जिला मुख्यालय के सर्वोत्कृष्ट, उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय, मारवाड़ी पाठशाला, भागलपुर में पढ़ने-पढ़ाने का निर्णय हुआ। तदनुसार स्कूल, गाँव और घर का चहेता उदय, सबों से विदा लेकर भागलपुर के लिये प्यारे दद्दू के संग निकल पड़ा।

उन दिनों अस्सी से भागलपुर जाने का एक ही कठिन रास्ता था। उत्तर 05 कि.मी. पैदल, फिर बस से करीब 15 कि.मी. के बाद घोघा रेलवे स्टेशन और घोघा से रेलमार्ग द्वारा 21 कि.मी. की सवारी कर भागलपुर पहुँच जाता था।

घोघा से भागलपुर के लिये एक ही द्रुतगामी रेलगाड़ी (अपर इंडिया एक्सप्रेस ट्रेन), 13 अप सुबह के 06 या 06:30 बजे चला करती थी। उसकी पीठ पर 15 या 20 मिनट बाद ही धुरियान सवारी गाड़ी (पैसेंजर ट्रेन), 337 अप थी। द्रुतगामी गाड़ी (एक्सप्रेस ट्रेन) का किराया सवारी गाड़ी से दोगुने से भी अधिक था। चूँकि पौत्र का पढ़ाई के निमित्त यह पहला, शगुन का सफ़र था, इसलिये निर्विघ्न, द्रुतगति से मंजिल तक पौत्र, उदय पहुँच जाये, इसके लिये अर्थाभाव के बावजूद दहू ने दोगुने मंहगे टिकटवाली द्रुतगामी गाड़ी द्वारा ही भागलपुर तक की यात्रा पूरी कराई ।

चुंबकीय व्यक्तित्व की अदृश्य शक्ति अपने विशिष्ट जन को स्वतःस्फूर्त आकर्षित कर लेती है। नामांकन के समय ही मारवाड़ी पाठशाला के मूर्धन्य जौहरी शिक्षक, विनोद कुमार ने अनगढ़ हीरे की पहचान कर ली थी। बस, कुछ हद तक तराशना बाकी था। उन्होंने विद्या के साधक व तपस्वी, अपने विशिष्ट नवल छात्र, उदय नारायण सिन्हा का परिचय सिद्धहस्त प्राचार्य, तपस्वी नाथ झा जी से कराया। बस, क्या था, 'सागर में सरिता समाने लगी' यानि साधक तपस्वी की साधना की धारा अपने लक्ष्य, सिद्ध तपस्वी (नाथ झा जी) के सागर में समाती, विराट रूप धारण करने लगी। जिसका फलाफल, दोनों के ही प्रिय छात्र, उदय ने हायर सेकेंडरी (कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षा, 1961 में, तब के सूबे बिहार में 07वाँ रैंक पाकर, गुरुओं का मान, विद्यालय का सम्मान और जिला का अभिमान बढ़ाया था। ध्यातव्य है कि उनदिनों बिहार स्कूल एक्जामीनेशन बोर्ड द्वारा कक्षा 11वीं की भी परीक्षा संचालित हुआ करती थी, जिसका सिलेबस 12वीं बोर्ड की तुलना में बहुत ही हल्का था, फलतः अधिकांश छात्र 11वीं की बोर्ड परीक्षा में ही शामिल हुआ करते थे। जबकि उदय ने 12वीं की चुनौतीपूर्ण कठिन परीक्षा में भाग लेकर अनुकरणीय सफलता प्राप्त की थी।

रिजल्ट के बाद योजनानुसार अध्ययन जारी रखने के क्रम में उदय, प्रसिद्ध बिहार तकनिकी शिक्षण संस्थान (बी.आई. टी.), सिन्दी में नामांकन हेतु गये। संस्थान परिसर के छात्रावास में रह रहे अध्ययनरत छात्रों के समक्ष ही अन्तर्वीक्षा का कार्यक्रम निर्धारित था । जीवन की पहली व शानदार अन्तर्वीक्षा (इन्टरव्यू) निकाल उदय को बहुत खुशी हुई थी, लेकिन लक्ष्मी वाहक, घुग्घू पलक झपकते, खुशी झपट ले गया। क्योंकि छात्रवृत्ति के पैसे भी घरखर्च के नाम पर जप्त होने के चलते हाथ में नहीं रहते और बंधुजनों के मदद के दिये साथ के पैसे, नामांकन के लिये नाकाफ़ी थे। फिर उनदिनों की संचार व्यवस्था भी ऐसी नहीं थी कि सुदूर सिन्द्री में बैठ, अपने स्वजनों से तुरत संपर्क साध, नामांकन के पैसे का उपाय किया जा सके। दूसरी ओर उदय की इन परिस्थितियों से बेखबर, संस्थान के कई छात्रावासी छात्रों ने ऐसी शानदार अंतर्वीक्षा में उसकी हाजिर जबाबी के लिये बधाईयों की झड़ी लगा दी थी। प्रथम ग्रासे मक्षिका पातः, को चरितार्थ करते नामांकन से मरहूम, कठोर आत्मविश्वासी, कट्टर धीर, उदय तनिक भी विचलित नहीं हुए और यथावत बंद सपनों की पोटली के साथ सिन्द्री से बैरंग वापस आ गये।

विकास के बढ़ते कदमताल में तरुणाई, दबे पांव आकर कब से अंगड़ाई लेना प्रारंभ कर गई, इसका एहसास तल्लीन साधक, किशोर से युवा हुए, उदय को तो नहीं ही था, मगर उसी विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र, कामिनी मोहन दास जी को इस सरस्वती वरद सुत की तरुणाई का एहसास हो चुका था, जिन्हें छोटी इकलौती सगी बहन, मनोरमा दास के लिये, तरुण 'उदय' भा गये थे क्योंकि तीक्ष्ण बुद्धिक्षमता के धनी, उदय की अंतर्वीक्षा से अभिभूत बी. आई. टी. सिन्द्री के छात्रावासी छात्र व उनके जिगरी दोस्त, आनंद मोहन सिन्हा से इस मेधावी छात्र की प्रसंशा सुन गदगद भाई कामिनी, मनोरमा संग उदय की शादी करने का मन बना चुके थे। उधर कम वेतनभोगी, भागलपुर शहर के किराये के तंग मकान में 06 बच्चों के साथ रहते हुए, दुर्दांत तंगी के बीच बसर करनेवाले पिता, लक्ष्मी नारायण सिन्हा जी भी जवान बेटा से हायर सेकेंडरी के बाद छोटेमोटे कामकर मौद्रिक सहयोग की उत्कटाकांक्षा पाले, इसी परीक्षा परिणाम तक के लिये व्याकुल प्रतीक्षारत थे। परंतु लक्ष्य भेदनगामी, बेसुध उदय ने पढ़ाई के सम्मुख दोनों प्रस्तावों को ठुकरा दिया था।

सिन्द्री से वापसी के पश्चात् समय की बर्बादी से बचने के लिये बिहार के प्रतिष्ठित, तेज नारायण जुबली (टी.एन.बी.) कॉलेज, भागलपुर के बी.एस-सी. पार्ट -01 में नामांकित होकर उदय ने अध्ययन जारी रखा, जिसकी 1963 की परीक्षा में गणित और भौतिकी में विशिष्टता (75% से अधिक अंको) के साथ भागलपुर विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इस परीक्षाफल के बाद भाई कामिनी मोहन दास की चिंतायें और

बढ़ गई थीं। इसलिये वे एक प्रतिष्ठित कंपनी में नौकरी के साथ बहन, मनोरमा संग शादी का प्रस्ताव लेकर पुनः उदय के पिता जी के पास पहुँचे।"पढ़ाई का धुनी बेटा पारिवारिक बंधनों में फँसने के बाद, धनार्जुनोमुखी हो जायेगा" - ऐसा सोच पिता जी ने भी शादी की स्वीकृति दे दी। चौतरफा दबाबों के बीच अन्यमनस्क आयुष्मान उदय नारायण सिन्हा ने पढ़ाई जारी रखने की शर्त पर आयुष्मती मनोरमा दास के साथ शुभदिन 03.07.1963 को सात फेरे लिये बड़े साले साहब ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिये इन्हें काफी प्रेरित किया तथा उसमें यथासाध्य मदद का वचन भी दिया।

" कहा जाता है कि हर सफल पुरुष के पीछे किसी न किसी महिला का हाथ होता है" इस वाक्य को पत्नी, मनोरमा ने पूरा चरितार्थ कर दिखाया है। शादी के बाद से ही उदय की पढ़ाई के अलावे साथ रह रहे संपूर्ण परिवार की आजतक, सारी जिम्मेदारियों से उन्होंने उदय को मुक्त कर रखा है। पटना के इंटरव्यू में सफलता के बाद जुलाई 1963 में बी.सी.ई. (बिहार कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग) भागलपुर की मेकेनिकल इंजीनियरिंग शाखा में नामांकित होकर छात्रवृत्ति के साथ, इन्होंने पढ़ाई का क्रम जारी रखा।

इस बीच 1965 के पूर्वाद्ध में इनके घर, भारी मातमपूर्ण घटना घटी। किसी भयंकर महामारी ने एक सप्ताह के अंदर उदय के परिवार के 04 सदस्यों को निगल लिया था। इसमें साथ-साथ विचरने वाले प्यारे दो छोटे भाई एक बहन और ज्ञानदीप प्रज्वलित करनेवाले पूज्य दादा जी इनसे सदा के लिये बिछड़ गये थे। ये अभी सदमें से उबरे नहीं थे कि गृह कलह के चलते दोनों प्राणियों को घर से बाहर निकाल दिया गया था। इतना ही नहीं इनकी सारी पुस्तकें, नोट्स आदि कौड़ी के दाम बाजार में बेच दिये गये थे, जिन्हें बमुश्किल पता लगाकर बड़े साले साहब ने दोगुने - तिगुने दाम में खरीद, इन्हें वापस लाकर दिया था।

इतनी हार्दिक एवं मानसिक परेशानियों के बीच 1967 में उदय ने बी.ई. मेकेनिकल इंजीनियरिंग से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्णता हासिल की और भारतीय प्राद्यौगिक संस्थान (आई.आई.टी.), कानपुर के अति कठिन अंतर्वीक्षा में अति सहज सफलता के बाद एम.टेक. में नामांकन कराया, जिसका सारा खर्च इनके परम मित्र, गोपाल झा जी ने वहन किया था। यहाँ भी इन्हें छात्रवृत्ति मिलती थी, जिससे घर का खर्च भी चलता था । डेढ़ वर्ष की पढ़ाई में आई.आई.टी. प्रशासन ने विशिष्ट मेधावी छात्र उदय को जंपिंग वर्गोन्नति देकर गाईड, प्रो. एम. एम. ओबेराय के अधीन शोध (पी.एचडी.) करने की अनुमति पर इन्होंने शोध आरंभ कर दिया था। इसबीच उदय को एक पुत्ररत्न प्राप्त हुआ था, जो कुछ महीनों से कठिन बीमारी से जूझ रहा था । अर्थाभाव में बेहतर इलाज़ के लिये मनोरमा उसे कानपुर अकेले लेकर आई थी। "क्या हमारे सभी परिजनों का इलाज, कानपुर में ही होता है? वापस घर जाओ, यदि मुझे खुश करना चाहती हो, तो मेरे माता-पिता को खुश करो, वे ही इलाज करायेंगे ।" - पुस्तकालय से आते बंद दरवाज़े के पास बैठी मनोरमा को देखते ही उदय भड़क उठे थे और लाख मनाने के बावजूद, दोस्तों के साथ वापस भेजने के बाद ही उन्होंने बंद दरवाजा खोला था।

शोधपत्र समर्पण के साथ ही संयोगवश राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशाला (एन.ए.एल.), बेंगलुरु 17 में वैज्ञानिक पद के लिये विज्ञापन निकला था। आवेदक, उदय के विषयांतरित प्रश्नों पर भी हाजिर जबाबी ने घंटों चली अंतर्वीक्षा में पैनल के हरेक सदस्य को मंत्रमुग्ध सा कर दिया था। पश्चात् सन् 1972 में एन. ए. एल. में योगदान के बाद उदय ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। सन् 1974 में पी. एच डी. की उपाधि के बाद डा. उदय नारायण सिन्हा ने अकेले या अन्य सहयोगी वैज्ञानिकों के साथ मिलकर 37 रिसर्च, 80 सायटेशन तथा 565 रीड्स के साथ अनेकानेक विज्ञान एवं मानवता के उत्थान का कार्य किया है, जिसे हम गुगल पर देख-सुन सकते हैं। डा. सिन्हा की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि, फ्लोसोल्वर पैरेलल कम्प्यूटर (सुपर कम्प्यूटर) का एन. ए.एल., बेंगलुरु में डिजाइन के साथ निर्माण, रही है।

सेवावधि में प्रत्येक 03 वर्षों पर मैरिट प्रमोशन के अंतर्गत साईन्टिस्ट 'ए' से कठिनतम इन्टरव्यू के सहज पार साईन्टिस्ट 'एच', डिस्टिंग्विश साईन्टिस्ट के साथ लाईफ टाईम एचीवमेन्ट एवार्ड तक की ऊँची उड़ान, डा. सिन्हा के कांतिमय देशसेवा की अनमोल कहानी स्वतः बयाँ कर जाती है।

भारत सरकार ने ज्ञानलाभ लेने के निमित्त इन्हें दोबार में 07 वर्षों का सेवाविस्तार दिया था, परंतु 05 वर्षों के बाद इन्होंने वैसी सेवा से मनाकर दिया। ऐसा नहीं कि औरों की तरह भारतीय आसमान में चमकते इस सितारे को विदेशों से ऊँची तनख्वाह का प्रलोभन नहीं मिला हो, लेकिन माँ भारती का दामन कभी नहीं छोड़ना, इनकी अटूट
देशभक्ति की अद्भुत मिसाल है। डा. सिन्हा के संदर्भ में लक्ष्मी ऐसे ही बार-बार हारती रही हैं। मैं अपने दादा जी के सुपुत्र उदय के प्रति बेमिसाल स्वाभिमान से ओतप्रोत ये गौरवमयी सत्यकथा सुन बेसुध रोमांचित हो बड़े पापा, डा. उदय नारायण सिन्हा से मिलने को तड़प उठा । पश्चात् ऐसी जिद्द मचाई कि 06 महीनों के अंदर माँ-पिता जी, अपने सेवारत विद्यालय से विशेष छुट्टी लेकर दीदी के साथ मुझे, मेरी कल्पना के महानायक, बड़े पापा से मिलाने बेंगलुरु लेते गये।
सुना है कि पारस के स्पर्श मात्र से लोहा सोना में बदल जाता है। कल्पनातीत सहज, सरल, स्नेहिल हवाई चप्पल धारी, बड़े पापा के चरण स्पर्श से ही संपूर्ण शरीर में मानो बिजली के झटके के साथ ऊर्जा का संचार हुआ और जब उन्होने उठाकर गले लगाया, तो सारे विकार काफूर हो गये। पुस्तकालयनुमा घर के सभी कमरों में रैक पर सजी हजारों उनकी मुखस्थ पुस्तकें, अनुकरणय दैनंदिनी में मनसा वाचा कर्मणा, विद्यार्जन के निमित्त 14 घंटे तक का कठोर स्वाध्याय, सर्वोच्च प्राथमिकता पर आज सेवानिवृत्ति के बाद भी आदतन जारी है। और जारी है, नये-नये सपनों को साकार करने की वो बेचैनी, जिनसे पीढ़ियों के सपने साकार हों। उनका कुछ ही दिनों का प्रथम सानिध्य, हमदोनों भाई बहन की जीवन वृत्तियाँ पलट, सही पथारूढ़ कर गया है। आज हमदोनों जो भी हैं, उनकी उसी वात्सल्य सानिध्य की ही देन है। हमारे जैसे सैकड़ों शिक्षार्थियों नें बड़े पापा से ऐसे ही अपने जीवन की राह संवारी है। मुझे गर्व है कि उनके आदेश पर मैंने वहाँ आवासीय भूखंड बड़ी माँ के हस्ताक्षरित गवाही में खरीदी है, जिसमें मकान की नींव के पूर्व की भूमिपूजा, बड़े पापा एवं बड़ी माँ के द्वारा सविनयित, कराई है।

संदीप कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक

अंचल कार्यालय में एमएसएमई कार्निवल का आयोजन

Welcome All The Esteemed Customer
RESOURCES , MSME & AGRI
CARNIVAL
We cordially invite you to join
UCO
Carnival
24th - 25th March

UCO
MSME | AG
Country)
SHI SE UNNATI
AIF
Rice Sheller
AHIDF
Salary
dially
you

अंचल कार्यालय में एमएसएमई कार्निवल का आयोजन

UCO BANK
THE NATION'S
TRUST
UCO
Carnival

d Customer
UCO BANK
THE NATION'S
SURAT

अंचल कार्यालय में योग दिवस का आयोजन

अंचल कार्यालय द्वारा स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन

GPS Map Camera
Surat, Gujarat, भारत
Pal Gam Rd, Moti Fali, Pal Gam, Surat, Gujarat 395009, भारत
Lat 21.197561° Long 72.777903°
25/09/2025 08:18 AM GMT +05:30
Google

स्वच्छता ही सेवा 2025
SWACHHATA HI SEVA 2025
GPS Map Camera
Surat, Gujarat, भारत
1, Pal Gam Rd, Navi Fali, Adajan, Surat, Gujarat 394510, भारत
Lat 21.196958° Long 72.777832°
25/09/2025 08:14 AM GMT +05:30
Google

अंचल कार्यालय द्वारा राजभाषा सम्मान एवं यूको जी.डी. बिड़ला व्याख्यान माला का आयोजन

यूको बैंक
जी.डी. बिड़ला
स्मृति व्याख्यानमाला
एवं
यूको राजभाषा सम्मान
वर्ष : 2025-26
UCO BANK

VEER NARMAD SOUTH GUJARAT
UNIVERSITY, SURAT
DEPARTMENT OF COMPARATIVE LITERATURE
VEER NARMAD
SOUTH GUJARAT
UNIVERSITY, SURAT
DEPARTMENT OF
COMPARATIVE
LITERATURE

अंचल कार्यालय में हिंदी दिवस समापन पर पुरस्कार वितरण का आयोजन

भारतीय भाषा सौहार्द स्वरूप
हिंदी दिवस

हिंदी दिवस
2025

BANK
Trust

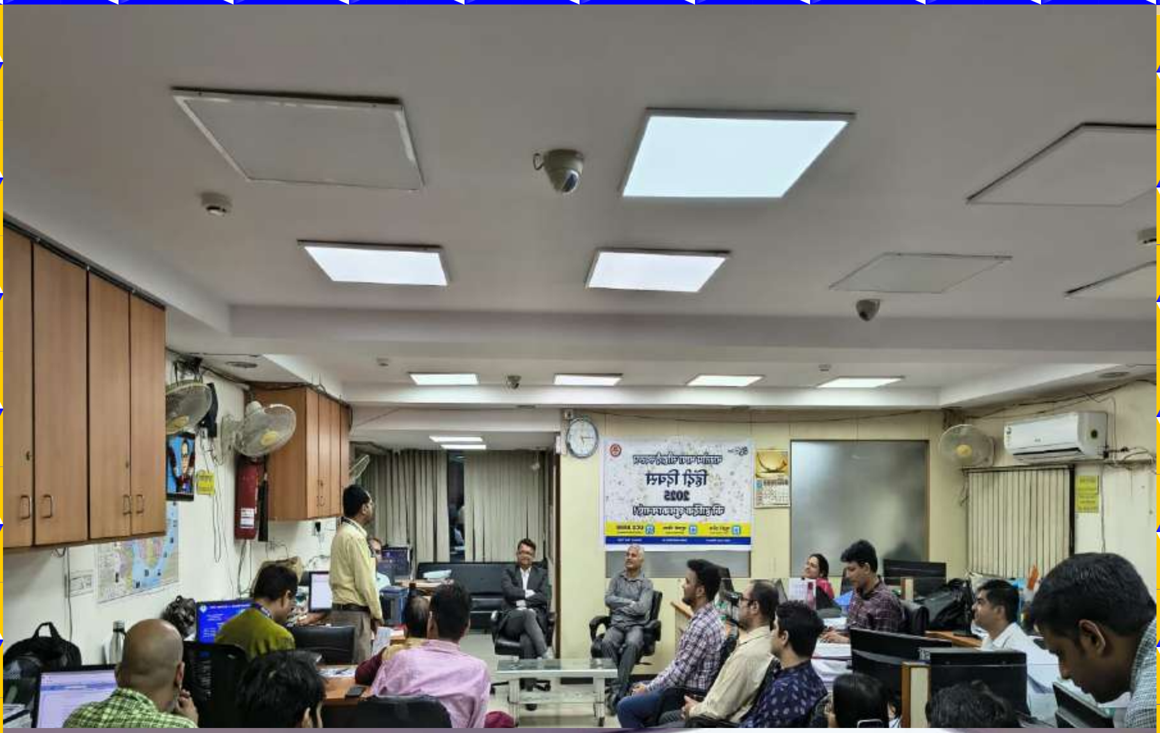

भारतीय भाषा सौहार्द स्वरूप
हिंदी दिवस
UCO BANK

सत्यमेव जयते

हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

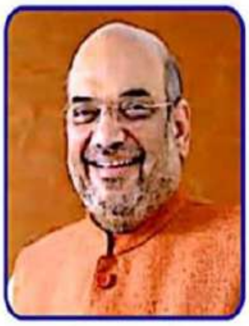

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूंद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

‘राजभाषा कीर्ति पुरस्कार’

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ पत्रिका प्रकाशन कार्य के लिए यूको बैंक को को भारत सरकार की सर्वोच्च पुरस्कार ‘राजभाषा कीर्ति पुरस्कार’ के अंतर्गत वर्ष 2024-2025 के लिए ‘द्वितीय पुरस्कार’ प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार भारत सरकार द्वारा महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्जिबिहिशन सेंटर, गांधीनगर में दिनांक 14 सितंबर, 2025 को आयोजित हिंदी दिवस समारोह एवं पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय श्री अमित शाह जी के कर कमलों से बैंक के प्रबंध निदेशक एवं कार्यकारी निदेशक श्री विजय कुमार कामले ने प्राप्त किया। इस अवसर पर बैंक की मुख्य प्रबन्धक श्रीमती हेमलता तांतिया जी भी उपस्थित रही।

उल्लेखनीय है कि पिछले चार वर्षों में बैंक को लगातार चौथी बार राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है जिसमें दो वर्ष ‘प्रथम पुरस्कार’ तथा एक वर्ष ‘द्वितीय पुरस्कार’ शामिल है और इस वर्ष पहली बार यूको बैंक की गृह पत्रिका अनुगूंज के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके साथ ही, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों हेतु भारत सरकार की योजना “नराकास राजभाषा सम्मान” के तहत बैंक के संयोजन में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), कोलकाता को ‘ग’ भाषाई क्षेत्र के अंतर्गत “प्रथम पुरस्कार” प्राप्त हुआ।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय यूकोजन,
आप सभी को हिंदी दिवस - 2025 की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ!

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि वह जीवंत चेतना है जो राष्ट्र की आत्मा को स्वर देती है। इसी चेतना की स्वर्णिम उपलब्धि के रूप में राजभाषा हिंदी हमारी संस्कृति, संस्कार और अस्मिता को आलोकित करते हुए जन-जन के हृदय को जोड़ने वाला वह सेतु बन चुका है, जिस पर भारत विकास के सोपानों को सहजता से पार कर रहा है। हिंदी ने अपनी परंपराओं को सँजोते हुए अन्य भाषाओं के रत्नों को आत्मसात कर एक बहुरंगी गंगा-जमुनी संस्कृति का निर्माण किया है।

संघ की राजभाषा नीति के प्रति यूको बैंक की प्रतिबद्धता एक सुदीर्घ साधना है, जो वर्ष 1974 से निरंतर हिंदी के अनुशासित अनुपालन में अभिव्यक्त हो रही है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों से प्रतिवर्ष सम्मानित होना हमारी उसी निष्ठा का प्रमाण है। हमें गर्व है कि इस वर्ष हमारी हिंदी गृह पत्रिका "यूको अनुगूँज" को 'ग' क्षेत्र की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका के रूप में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) तथा नराकास (बैंक) कोलकाता को नराकास राजभाषा सम्मान (द्वितीय) से अलंकृत किया गया है। साथ ही, हमारे 8 नराकासों में से 6 नराकासों का उत्कृष्ट प्रदर्शन, यूको बैंक की सामूहिक भाषायी चेतना का दर्पण है। इन विजयी नराकासों के अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस उपलब्धि को समस्त यूकोजन को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने हिंदी को केवल भाषा नहीं, कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने में महती भूमिका निभाई है।

राजभाषा हिंदी केवल कार्य की भाषा नहीं, हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है। यूको बैंक परिवार का प्रत्येक सदस्य इसके अनुपालन में पूर्ण समर्पण और तन्मयता से जुड़ा है। प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार के माध्यम से हम न केवल हिंदी को कार्यालयीन जीवन में सहज बना रहे हैं, बल्कि तकनीकी नवाचारों के साथ उसे आधुनिक कार्य संस्कृति में भी आत्मसात कर चुके हैं। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर मेरी यह अपेक्षा है कि सभी कार्मिक **हिंदी को केवल नियम नहीं, नियमित व्यवहार बनाएं**, क्योंकि हिंदी का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान है।

हिंदी को जनमानस की भाषा बनाने के लिए हमें दृढ़-संकल्प होकर कार्य करना होगा। यह सिर्फ सरकारी कार्यालयों की भाषा नहीं बनें अपितु हमारे देश की आम जनता के लिए **सरल, सुलभ और सुग्राही** भाषा बनें। इसके लिए हमें न केवल हिंदी को अपनाना है, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान और जिज्ञासा बनाए रखनी होगी। जब हम भाषाएँ सीखते हैं, तो संस्कृति से संवाद, सभ्यता से साक्षात्कार और समाज से आत्मीयता स्वतः जुड़ जाती है। जब हम भाषाओं का सम्मान करते हैं, तो हम संबंधों का विस्तार करते हैं और यही शक्ति भारत को एकसूत्र में पिरोती है।

हिंदी दिवस-2025 के इस पावन अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि कार्यालय का प्रत्येक कार्य राजभाषा हिंदी में पूर्ण तन्मयता और निष्ठा के साथ संपन्न करें। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम का अक्षरशः अनुपालन हमारी भाषायी प्रतिबद्धता का प्रतीक बने। प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हम न केवल प्रतिभा को मंच देंगे, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह, प्रेरणा और सकारात्मकता का वातावरण भी निर्मित करेंगे। आइए, हम सब मिलकर इसे अपने कर्म की भाषा बनाएं, हृदय से हिंदी अपनाएँ — यही सच्चा राष्ट्र सम्मान है।

(अश्वनी कुमार)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

आज की सुरक्षा युक्ति
CSOC
साइबर जागरूकता
सतर्कता को सुरक्षा में बदलना
चीज़ें जो आपको साझा नहीं करनी चाहिए
पासवर्ड या वित्तीय साख
कार्ड के विवरण
सीवीवी कोड
एटीएम या यूपीआई पिन
ओटीपी
साइबर धोखाधड़ी की घटना की सूचना https://www.cybercrime.gov.in पर दें या सहायता हेतु 1930 पर कॉल करें।
यूको बैंक UCO BANK
CISO OFFICE

SAFETY TIP OF THE DAY
CSOC
CYBER JAGROOKTA
Transforming Awareness into Protection
Things You Must Never Share
Passwords or Financial Credentials
Card Number
CVV Code
ATM / UPI PIN